स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी के प्रतीकात्मक उपकरण और उनका प्रभाव

नाजमीन
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय बीबी नगर, बुलंदशहर
ईमेलः nazmeenrais151@gmail.com

सारांश

महात्मा गांधी का संपूर्ण जीवन प्रयोगात्मक रहा है और इन प्रयोगों में उन्होंने जिस वैचारिक की भूमिका को प्रस्तुत किया उनका आचार्य स्वरूप विभिन्न प्रतीकात्मक उपकरणों में व्यक्त किया जा सकता है। गांधी जी का राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विचार स्वदेशी स्वावलंबन के विभिन्न प्रतीकात्मक उपकरणों का प्रयोग रहा है, जो देश और काल की परिस्थितियों के अनुकूल था जिसकी भूमिका 1909 के ''हिंद स्वराज'' नामक पुस्तक में पहले ही प्रस्तुत कर दी गई थी।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 01.03.2022
Approved: 14.03.2022

नाजमीन

स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी के प्रतीकात्मक उपकरण और उनका प्रभाव

RJPP Oct.21-Mar.22, Vol. XX, No. I,

pp.179-183
Article No. 24

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-1

गांधी जी के यह प्रतीकात्मक उपकरण जिसमें सत्य, अहिंसा, खादी, नमक, राष्ट्रीय शिक्षा, हिंदी भाषा का प्रयोग, अस्पृश्यता का अंत जैसे मूलाधार थे जो न केवल सामानय जन के जुड़े हुए विषय थे बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन के आधार बने जिन पर स्वतंत्रता आंदोलन को गांधीजी ने जन आंदोलन बनाया था। गांधी जी के प्रयोग जन उपकरणों में चरखा स्वदेशी आर्थिक समृद्धि का प्रतीक, अहिंसा निशस्त्रीकरण का प्रतीक, असहयोग एवं सविनय अवज्ञा मानवता का प्रतीक, नमक किसान व मजदूर आंदोलन जन जागरण का प्रतीक, गांधी जी के उपदेश सर्वधर्म समन्वय व सामाजिक समता का प्रतीक है, और इन्हीं मूल आधारों पर उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को एक विस्तृत आधार दिया।

अहिंसा के बिना सत्य की खोज असंभव है गांधीजी के अनुसार सत्य और अहिंसा दोनों गुण को वास्तविक अर्थो में मानव बनाते हैं जिस व्यक्ति में सत्य एवं अहिंसा के गुण का समावेश हो जाता है वह निरन्तर सफलता प्राप्त करता चला जाता हैं सत्य और अहिंसा का पालन करने में ही परमतत्व की महिमा को समझाना सम्भव हैं इन गुणों के पालन से व्यक्ति में समरूपता, सहयोगी, मैत्री, करुण आदि सदगुण विकसित होते हैं।

सत्य बोलना ही सत्य नहीं है वाणी में विचार में तथा व्यवहार में भी सत्य होना वास्तविक सत्य है ये सब जानने वाले को कुछ और जानना शेष नहीं रहता गांधी जी मानते थे कि यदि हम इसे कसौटी मान ले तो हमें यह जानने में देर नहीं लगेगी कि कौन सी प्रवृत्ति है और कौन सी गलत।

गांधीजी के अनुसार मन वचन और शरीर से किसी को कष्ट न पहुंचाना ही अहिंसा है अहिंसा का शाब्दिक अर्थ होता है हिंसा न करना किसी को नहीं मारना अहिंसा का मार्ग भले ही सरल प्रतीत होता है परंतु इस पर चलना तलवार की तेज धार पर चलने के समान होता है इसके बिना मानव जीवन की सार्थकता सिद्ध नहीं हो सकती है।

अहिंसा के बिना सत्य की खोज असंभव है गांधीजी के अनुसार सत्य और अहिंसा दोनों गुण को वास्तविक अर्थो में मानव बनाते हैं जिस व्यक्ति में सत्य एवं अहिंसा के गुण का समावेश हो जाता है वह निरंतर सफलता प्राप्त करता चला जाता हैं सत्य और अहिंसा का पालन करने में ही परमतत्व की महिमा को समझाना संभव हैं इन गुणों के पालन से व्यक्ति में समरूपता, सहयोगी, मैत्री, करुण आदि सदगुण विकसित होते हैं।

महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधित विचार मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के सर्वांगीण तथा उत्कृष्ट विकास से अभिप्रेरित है गांधीजी के अनुसार शिक्ष वह हे जो बालक के शरीर मन तथा आत्मा का विकास करे गांधीजी ने एक नई शिक्षा की योजना प्रस्तुत की जिसे आम भाषा में बुनियादी शिक्षा कहा जाता है इसे आधुनिक युग में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का प्रथम ब्लूप्रिंट कहा जाए तो गलत ना होगा। वास्तव में एक बुद्धिजीवी विचारक के रूप में उनका अनुभव था कि ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली भारत की सामाजिक आर्थिक संरचना के अनुरूप नहीं है क्योंकि ब्रिटिश शिक्षा पद्धति भारतीयों को भारत से अलग कर उन्हें काले अंग्रेजों में परिवर्तित कर रही थी ऐसे वातावरण में गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा का सिद्धांत दिया। यह सिद्धांत भारत और भारतीयों को केंद्र में रख कर दिया गया था देश के कल्याण तथा सामाजिक आर्थिक चुनौतियों का सामना करने के उद्देश्य से उन्होंने वर्धा शिक्षा योजना का निर्माण किया सन 1937 ई० में गांधीजी ने वर्धा में हो रहे ''अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन'' जिसे वर्धा शिक्षा सम्मेलन कहां गया था उसमें अपनी बेसिक शिक्षा की योजना को प्रस्तुत किया।

बुनियादी शिक्षा का सिद्धांत भारत जैसे विकासशील देश में विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ कुछ धनोपार्जन का उद्देश्य भी रखता है। गांधीजी ने जनसंख्या की तात्कालिक तथा भविष्य की स्थिति को समझाा और विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ व्यवसायिक कौशल सिखाने का विचार प्रस्तुत किया।

देश की एकता को बढ़ाने और दृढ़ करने के लिए विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोगों के बीच उपयोग में आने वाली एक सामान्य भारतीय भाषा की जरूरत महसूस की। इस पहलू पर भी उन्होंनें आम जनता के दृष्टिकोण से ही विचार किया। अपने निजी अनुभाव के आधार पर इस नतीजे पर पहुंचे कि यह सर्व–सामान्य भाषा हिंदुस्तानी ही हो सकती है जो ज्यादा से ज्यादा सरल और सीधी–सदी हो।

गांधी के विचारों में चरखा गीत कर्मियों का प्रतीक है जो देश में शांति की स्थापना करेगा चरखा न केवल गरीबों को रोजगार देगाा बल्कि उनके शील की रक्षा करेगा, यह हमारा बांया फेफड़ा है जिसे हमें बचाना होगा जीवन आलस्य से मरता हैं और श्रम की सक्रियता से हरा भरा रहता हैं इसीलिये ''चरखा–खादी'' एक वस्त्र नहीं विचार और गांधीजी ने इन विचारों को राष्ट्रीय आंदोलन को सामान्य जनता को सामान्य जनता से जुड़ा जिसमें अब न सिर्फ बंगाल में भद्रलोक, मुंबई के चितपावन ब्राह्मण या मद्रास के तमिल ब्राह्मणों जैसे समूह थे बल्कि किसान, मजदूर, दस्तकार, व्यापारी, कर्मचारी, पुरुष, महिला, बच्चे, बुढ़े सभी लोग जुड़ गए थे। गांधीजी यह जानते थे कि भारत में बहुत लोग हैं जो नंगे–भूखे रहते हैं उनके पास अपने तन ढकने को साधारण वस्त्र भी नहीं है इसलिए इन्होंने चरखा और खादी को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। जिसके प्रयोग से न केवल अपनों को वस्त्र मिले बल्कि वह आर्थिक रूप से उन्हें सबल भी बना सके। इसलिए गांधीजी के प्रतीकात्मक उपकरणों को भारत के आर्थिक–सामाजिक संदर्भों में समझा जाना चाहिए ना के अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई औद्योगिकीकरण की वकालत के संदर्भ में।

गांधीजी के प्रतीकात्मक उपकरणों में दूसरा नमक था, गांधी के द्वारा उठाया गया ''नमक'' एक ऐसा प्रश्न था जिसने एक ही क्षण में स्वराज आंदोलन को ग्रामीण क्षेत्र के जनसमर्थन से जोड़ दिया था, जिसमें सामाजिक आधार पर फोटो डालने वाले संभावनाएं नहीं थी, जिस प्रकार खादी अतिरिक्त आय का साधन थी उसी प्रकार नमक आंदोलन के समर्थक किसानों को भी नमक में अतिरिक्त आय की संभावना दिखाई दी–भले ही नमक से अधिक आय भी आसान आ रही हो फिर भी इस संभावना का विशेष मनोवैज्ञानिक महत्व था।

निसंदेह ड़ाडी यात्रा और धरसाना की वीरता पूर्ण अंहिंसा आंदोलनों पर सरकार के क्रूरतापूर्ण धनात्मक तरीकों ने नमक आंदोलन के महत्व को बढ़ाने में अपना योगदान दिया। जिसको स्वयं वाइसराय ने गांधी के समक्ष स्वीकार किया कि आपने– ''नमक को लेकर एक अच्छी रणनीति की योजना बनाई।''

अपनी संघर्ष शैली में उन्होंने केवल असहयोग ही नहीं बल्कि रचनात्मक कार्यक्रम भी रखें उन्होंने स्वदेशी आंदोलन चलाया जिसमें देश की संस्कृति और सभ्यता की नई राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुरूप पुनरुद्धार किया साथ ही उन्होंने राष्ट्र की उत्पादन– मानसिकता को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया। जो लोग कुछ भी नहीं कर सकते थे उनके हाथों में तकली और चरखी आ गए। उनका यह सु परिणाम हुआ कि अंग्रेजों की अर्थव्यवस्था को झटका लगा। गांधी जी के स्वदेशी और

उत्पादन– विकास– संघर्ष से गांव को बड़ा बल मिला, जिससे उनका आत्मविश्वास जागा और साथ में आत्म गौरव भी। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने अपना सबसे पहला हमला भारत के गांवों पर ही किया। गांधीजी ने इस बात को समझा और भारतीय ग्राम के व्यक्ति की पुनः प्रतिष्ठा की। उन्होंने नगरवासियों को अंग्रेजों की चाल को समझाया और ग्राम और नगरों में एकता स्थापित कर दी। इसने राष्ट्रीय एकता के भाव को और भी अधिक स्पष्ट किया।

गांधीजी व्यवहारिक रुप से आदर्शवादी थे। और उन्होंने देख लिया था कि राष्ट्रीय एकता की स्थापना करने और उसे कायम रखने के लिए धनवानो और निर्धनों के बीच की खाई को पाटना जरूरी है। सर्वोदय में आर्थिक समानता का आदर्श अंतर्निहित है। जिसे कोई भी, अहिंसात्मक शासन– प्रणाली क्यों ना हो बराबर अपने सामने रखना है। जो कोई भी राष्ट्रीय सेवा का दावा करता है उसे सबसे पहले सामने रखना है। जो कोई भी राष्ट्रीय सेवा का दावा करता है उसे सबसे पहले नीचे से नीचे तबके साथ आत्मीयता लानी है। इसीलिए गांधी जी ने कताई और इसी तरह के दूसरे 'रोटी देने वाले श्रम कार्य' पर इतना जोर दिया ताकि मेहनत, मजदूरी करने वाली आम जनता के साथ आत्मीयता पैदा करने के यह प्रतीक बन सके। पूंजीपति और मजदूर दोनों को ही उन्होंने समाज के प्रति उनके कर्तव्यों की याद दिलाई क्योंकि, वही उनके अधिकारों के स्त्रोत हैं। सभी प्रकार की संपत्ति और मानव की उपलब्धियों प्राकृतिक और सामाजिक जीवन दोनों की ही देन है, इसलिए इनके स्वामियों को इनका ट्रस्टी ही समझा जाना चाहिए जिनका यह धर्म है कि वह समाज के कल्याण के लिए ही इनका उपयोग करें।

गांधीजी व्यक्तिगत रूप से परम धार्मिक पुरुष थे। वे सिद्धांतवाद और आचार व्यवहार के बीच शब्द एवं भाव के बीच भेद करते थे क्योंकि, शब्द मारने वाले हैं तथा भाव जीवन देने वाला है। शास्त्रों के वचन को गांधीजी बिना सोचे विचारे स्वीकार करने को राजी नहीं थे उन्होंने कहा– ''हर धर्म के हर नियम को आज के बौद्धिक युग में खरा उतरना होगा।'' गांधीजी ने हमेशा परमात्मा के दुखी जीवो की दरिद्र नारायण के रूप में सेवा करनी चाही। संकीर्ण स्वार्थ भावना की जबड़ से मुक्त होने के लिए उन्होंने निरंतर जीवन भर प्रयास किया। उनकी राजनैतिक तथा सामाजिक सभी तरह की क्रियाशीलता में पूरी तरह घुल मिल गई। क्षेत्रों में भगवत गीता के श्री कृष्ण उनके पथ प्रदर्शक थे और कर्म योग उनका दर्शन था।

साथ ही साथ दूसरे धर्मों के लिए भी गांधीजी के मन में बहुत आदर था। उनका मानना था कि सभी धर्मों में परमात्मा की झांकी मिलती है, केवल उनका वर्णन अलग–अलग है। धर्मों को लेकर अगर झगड़े होते हैं, तो उनकी जिम्मेदारी धर्मों पर नहीं, व्यक्तियों पर है। वह हमेशा यही चाहते थे कि सब लोग अपने–अपने धर्मों के साथ दूसरों के धर्मों के प्रति भी आदर और श्रद्धा का भाव रखें।

यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही था कि स्वाधीनता के लिए किए जा रहे राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति के साथ–साथ सांप्रदायिक तनाव में भी वृद्धि होती गई। गांधीजी के पथ प्रदर्शन में देश के विभिन्न नेताओं ने उस तनाव को दूर करने और देश के दोनों प्रमुख संप्रदायों के बीच भाईचारा स्थापित करने के लिए जबरदस्त कोशिशें की। सन 1924 ई० में गांधीजी का 21 दिवसीय अनशन हृदय परिवर्तन कराने के लिए ही हुआ और उसे देशवासियों के दिलों में यह बात बिठाने में कामयाबी मिली कि हिंदू मुस्लिम एकता गांधी जी के संपूर्ण राजनैतिक कार्यक्रम की आत्मा है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए अंततः उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

गांधीजी से एक बार एक प्रश्न किया गया था कि यह कब समझा जाएगा कि भारत ने पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त कर ली है तो उन्होंने उत्तर दिया कि ''जब जन गण यह महसूस करने लगेंगे कि वे अपने यत्नों से अपना भाग्य बना सकते हैं। ''इस जवाब से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह बताना चाहते थे कि चाहे कोई बौद्धिक वर्ग हो, चाहे श्रमिक वर्ग सभी को आत्मनिर्भरता के पथ पर निरंतर प्रगतिशील रहना चाहिए। महात्मा गांधी द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों के अंतः क्रियाओं को समकालीन भारतीय समाज एवं ब्रिटिश साम्राज्यवादी सत्ता के संदर्भ में जोड़ कर देखे जाने की जरूरत है। इस प्रकार इन प्रतीकों के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन में जन सहभागिता बढ़ी एवं समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति जुड़ाव बढ़ा, जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय आंदोलन सही दिशा में आगे बढ़ा जिसके उपरांत एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में भारतीय संघ का जन्म हुआ। गांधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन में विभिन्न प्रतीकों को एक व्यापारिक और व्यवहारिक उपकरणों के माध्यम से भारत की सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

संदर्भ

1. गांधी, महात्मा. सत्य के साथ मेरे प्रयोग.
2. कुमार, त्रिवेदी. गांधी का गांवों का प्रभाव.
3. चंद्र, विपिन. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष.
4. मुखर्जी, हीरेन. गांधी ए स्टडी. नई दिल्ली.